

संबंधित साहित्य को बनाया गया है। इस प्रकार इस कोश में प्राचीन और अर्वाचीन शब्द-भंडार के समन्वय का प्रयास किया गया है।

कोश को पूर्ण रूप से उपयोगी बनाने के लिए मूल प्रविष्टि का चयन करते हुए उसका संधि-विच्छेद तथा समास-विग्रह भी आवश्यकतानुसार यथा-स्थान दिया गया है ताकि प्रविष्टियों की संकल्पनाओं को आसानी से समझा जा सके। सभी प्रविष्टियों के आगे उनकी व्याकरणिक कोटियाँ स्पष्ट करते हुए उनकी संक्षिप्तियाँ आदि भी प्रारंभ में दे दी गई हैं। संज्ञा पुल्लिंग शब्दों के लिए केवल पुं. तथा संज्ञा स्त्रीलिंग के लिए केवल स्त्री. का प्रयोग किया गया है। कोश में प्रयुक्त सभी संक्षिप्तियों की सूची भी कोश के प्रारंभ में दे दी गई है। प्रयोक्ताओं की सुविधा की दृष्टि से प्रविष्टि के मूल उद्गम-स्रोत का उल्लेख व्याकरणिक कोटि के तुरंत बाद कोष्ठक में कर दिया गया है। निदेशालय की परंपरा के अनुसार मूल संस्कृत शब्दों को तत्सम, उनसे व्युत्पन्न शब्दों को तदभव के रूप में दर्शाया गया है। अन्य भाषाओं से हिंदी में आए शब्दों के स्रोत का उल्लेख भी यथा स्थान किया गया है। अर्थ-निरूपण की दृष्टि से यदि शब्दों को परिभाषित करना आवश्यक समझा गया है तो वह भी यथास्थान किया गया है। परिभाषाओं को यथासंभव सरल, मौलिक एवं स्वतःपूर्ण बनाने का भरपूर प्रयास किया है। अनतिविस्तार- "नामूलं लिख्यते किंचित् नानपेक्षितमुच्यते" को सर्वथा ध्यान में रखा गया है। विशिष्ट अनुशासनों से संबंधित प्रविष्टियों की परिभाषाएँ मानक कोशों की दृष्टि में रखते हुए दी गई हैं। प्रविष्टि की संकल्पना को अधिकाधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए कहीं-कहीं हिंदी के तकनीकी शब्दों के पर्याय के रूप में अंगरेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। हिंदी कोशों की अकारादि क्रम परंपरा का अनुसरण करते हुए इस कोश की प्रविष्टियों का क्रम सुनिश्चित किया गया है। जहाँ तक वर्तनी के प्रयोग का प्रश्न है, परंपरानुसार कोश में निदेशालय के मानक वर्तनी संबंधी नियमों को ही आधार बनाया गया है। दो खंडों में प्रकाशित इस कोश को अधिकाधिक उपयोगी बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है। निदेशालय का प्रयास रहा है कि प्रस्तुत कोश में बहुप्रचलित, सर्वोपयोगी एवं पारंपरिक महत्व के अधिकाधिक शब्द समाहित किए जा सकें।

हमें विश्वास है कि इस कोश के प्रकाशन से आधुनिक हिंदी-जगत की एक बड़ी रिक्ति दूर होगी। यह कोश हिंदी जगत की अपेक्षाओं के साथ-साथ हिंदीतर भाषा-भाषियों एवं विदेशियों के लिए भी उपयोगी एवं कारगर रहेगा। विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पत्रकारों, हिंदी-सेवियों, तथा अध्येताओं के लिए भी यह कोश सभी प्रकार से उपयोगी बने यही हमारा प्रयास रहा है। पूर्णतः पूर्ण प्रायः कुछ भी नहीं होता। कोश युग-युगांतर